(IJRMST) 2018, Vol. No. 6, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5134, p-ISSN: 2455-9059**

हृदय रोगों में मन्त्र चिकित्सा : एक पूर्वावलोकन

गरिमा१ प्रो जे॰ एस॰ त्रिपाठी२

१ शोधछात्रा, काय चिकित्सा विभाग, आयुर्वेद संकाय, आई॰ एम॰ एस॰,
बी॰ एच॰ यू॰, वाराणसी

२ प्रो॰ जे॰ एस॰ त्रिपाठी, काय चिकित्सा विभाग, आयुर्वेद संकाय, आई॰ एम॰ एस॰, बी॰ एच॰ यू॰, वाराणसी

सारांश – सृष्टि के आरम्भ से ही रोगों का इतिहास भी आरम्भ होता है। रोगों से बचाव हेतु मानव ने आरम्भ से ही प्रयत्न करना प्रारम्भ कर दिया था और आज तक रोगों के निदान एवं उपचार हेतु वह लगातार प्रयत्न कर रहा है। प्रारम्भ में हैजा, टी॰ बी॰, प्लेग आदि संक्रामक रोगों से छुटकारा पाने हेतु अनेकों प्रकार के अन्वेषण एवं अनुसन्धान हुए, लेकिन कालांतर में पुनः हृदय रोग, कैंसर, डेंगू, एड्स आदि भयंकर रोग उत्पन्न हो गए, जिनके समाधान एवं उपाय हेतु सम्पूर्ण विश्व प्रयत्नशील है। मानव द्वारा पुनर्जन्म तथा वर्तमान में किये गए कर्मों के आधार पर उनके रोगों के निवारण हेतु मंत्र चिकित्सा का प्रयोग हमारे प्राचीन ऋषि- मुनियों द्वारा किया गया। विश्व के सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद तथा अथर्ववेद में पांडुरोग, हृदय रोग, उदररोग, नेत्र आदि रोगों की चर्चा प्राप्त होती है। हृदय मानव शरीर का महत्वपूर्ण अंग है। हृदयरोगों का स्पष्ट वर्णन ऋग्वेद तथा अथर्ववेद में है। हृदय अष्टाचक्र, नवद्वार तथा पुण्डरीकाकर है और इसका रोग दुर्विज्ञेय कहा गया है। हृदय रोग के निवारण में मंत्र चिकित्सा भौतिक उपचार आसान उपचार अत्यंत लाभप्रद हैं । जिनका नियमित रूप से प्रयोग करने पर रोगीयों को अत्यधिक लाभ होता है । प्रस्तुत लेख में हृदय रोग के निवारणार्थ मन्त्र चिकित्सा का वर्णन किया गया है । जिसका उद्देश्य वर्तमान समय में प्राचीन चिकित्सा को लोगों के सामने प्रस्तुत कर उन्हें उसके उपयोगिताओं से अवगत कराना है ।

मुख्य शब्द – हृदय, हृदय रोग, मन्त्र चिकित्सा, तान्त्रिक उपचार, यौगिकोपचार, भौतिक उपचार

सृष्टि के आरम्भ से ही रोगों का इतिहास भी आरम्भ होता है। रोगों से बचाव हेतु मानव ने आरम्भ से ही प्रयत्न करना प्रारम्भ कर दिया था और आज तक रोगों के निदान एवं उपचार हेतु वह लगातार प्रयत्न कर रहा है। प्रारम्भ में हैजा, टी॰ बी॰, प्लेग आदि संक्रामक रोगों से छुटकारा पाने हेतु अनेकों प्रकार के अन्वेषण एवं अनुसन्धान हुए, लेकिन कालांतर में पुनः हृदय रोग, कैंसर, डेंगू, एड्स आदि भयंकर रोग उत्पन्न हो गए, जिनके समाधान एवं उपाय हेतु सम्पूर्ण विश्व प्रयत्नशील है। लेकिन परिणाम आज भी शुन्य है । विडम्बना यह है कि मानव जितना प्राकृतिक रहस्यों को खोजने का प्रयास करता है, प्रकृति उतना ही अपना विस्तार करती जाती है । हमारे प्राचीन ऋषि- मुनियों ने जहाँ अणुवाद एवं परमाणुवाद के विषय में जाना तथा अध्यात्म कि गहराइयों में गोता लगाया, सांख्यशास्त्र के प्रकृति एवं पुरुष से सृष्टि की प्रक्रिया से सम्बन्ध स्थापित किया वहीं पर खगोल में ग्रह- नक्षत्रों को बांस की नलिका के द्वारा करोड़ों कोसो दूर धरती पर बैठकर सूर्यादि ग्रहों का वेध किया तथा उनके द्वारा भूमि पर पड़ने वाले शुभाशुभ प्रभाव को मानव के साथ जोड़कर उसको व्याख्यायित किया एवं मानव

(IJRMST) 2018, Vol. No. 6, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5134, p-ISSN: 2455-9059**

द्वारा पुनर्जन्म तथा वर्तमान में किये गए कर्मों के आधार पर उनके रोगों के निवारण हेतु मंत्र चिकित्सा का प्रयोग हमारे प्राचीन ऋषि- मुनियों द्वारा किया गया। विश्व के सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद तथा अथर्ववेद में पांडुरोग, हृदय रोग, उदररोग, नेत्र आदि रोगों की चर्चा प्राप्त होती है।

मानव हृदय की संरचना एवं कार्य- हृदय मानव शरीर का महत्वपूर्ण अंग है। मानव शरीर का हृदय लचीली मांशपेशियों से बना हुआ अत्यंत ही कोमल लाल वर्ण के थैले के समान चार खण्डों से युक्त दोनों फेफड़ों के मध्य वक्ष के बायीं ओर तीसरी से छठी पसली के मध्य होता हैस हृदय का आकर एक स्वस्थ व्यक्ति की बंद मुठ्ठी के समान पांच इंच लम्बा, तीन इंच चौड़ा, ढाई इंच मोटा, वजन में लगभग पांच छटांक या इससे कुछ अधिक होता है। स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों में यह बड़ा होता हैस इसका आकर कलमी आम या नाशपाती के समान होता है। यह अंदर से पतला ओर नुकीला होता है। हृदय का मुख्य कार्य पम्पिंग विधि द्वारा शरीर की शिराओं द्वारा नियमित रूप से रक्त को प्राप्त करके फेफड़ों की सहायता से उसमें कार्बनडाई अहृक्साइड दूषित तत्व को निकालकर अहृक्सीजन को प्रवाहित करता है। हृदय ने मानों विश्राम किया तो मृत्यु हो गयी। हृदय के इस प्रकार आकुंचन एवं प्रसारण को धड़कन कहते हैं। हृदय की गति ६९ से ६४ प्रतिमिनट होती हैस पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों का हृदय अधिक तेजी से धड़कता है। उपनिषदों की ऐसी मान्यता है कि आत्मा पुण्डरीकाकर हृदय में रहता है और होता नामक सहस्रों नाड़ियाँ जो हृदय से निकलकर सम्पूर्ण शरीर में फैली रहती है और चेतना का संचार करती है, सुषुप्ति काल में आत्मा हृदय के दहर नामक आकाश में विश्राम करती है ।ॉ

हृदय तथा रक्त संचार सम्बन्धी रोग- हृदयरोगों का स्पष्ट वर्णन ऋग्वेद तथा अथर्ववेद में हैद्य हृदय अष्टाचक्र, नवद्वार तथा पुण्डरीकाकर है और इसका रोग दुर्विज्ञेय कहा गया है।

"अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पुरयोध्या ।

तस्याः हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृत्तः।।"१

मानव हृदय में दूसरे रोगों की तरह हृदय के भी अनेक रोग हैं । जिनमें अहृर्गैनिक डिसहृर्डर्स (Organic Disorders) तथा कुछ रोग हृदय के ठीक से कार्य न करने से सम्बंधित है, जिन्हें फंक्शनल डिसअहृर्डर्स (Functional Disorders) कहते हैंद्य आर्गेनिक डिसअहृर्डर्स में सर्जरी उत्तम है । फंक्शनल डिसहृर्डर को खान-पान एवं औषधि के सेवन से ठीक किया जा सकता है ।

हृदय तथा रक्तसंचार सम्बंधित प्रमुख रोग- उच्च रक्तचाप, निम्न रक्तचाप, हृदय कपट सम्बन्धी रोग, रक्तवाहिनियों का कड़ा पड़ जाना, शिराओं का फूल जाना, एंजाइना पेक्टोरिस (Angina Pectori) रक्त संचार की कमी से हृदय में तीव्र पीड़ा होना जिससे बाएं कंधे या हाथ में दर्द होना, कार्डिएक हाइपरट्रहफी (Cardiac Hypertrophy) हृदय के आकर की असामान्यता, कार्डिएक डायलेटेशन (Cordiac Dilation) हृदय के आस- पास तरल पदार्थ इकठ्ठा होना, टेकीकार्डिया (Tachycordi) धड़कन की गति में तीव्रता आना, आर्टिकुलर फिब्रिलेशन (Articular Fibrillation) हृदय की पेशियों का सिकुड़ना, ब्रेडिकार्डिया (Bradycardia) हृदय का सामान्य गति से काम धड़कना, हार्ट ब्लहृक (Heart Block) हृदय में अवरोध, कोरोनरी थ्राम्बोसिस (Coronary Thrombosis) हृदय की

एक या अधिक धमनियों में रूकावट होना, हार्ट अटैक (Heart Attack) दिल का दौरा पड़ना, तथा हार्ट फेल्योर (Heart Failure) हृदय की धड़कन बंद होना अर्थात मृत्यु ।

शरीर के जितने भी सुकोमल अंग तथा उपांग हैं, उनका धीरे - धीरे क्षय होना तो प्रकृति का नियम ही है । शरीर के किस अंग का किस अवस्था में क्षय होने की संभावना है इसका ज्ञान ज्योतिष शास्त्र द्वारा जातक के जन्म काल में ही जन्मकुंडली के निर्बल ग्रह से सम्बंधित रोगों का ज्ञान हो जाता है, ये रोग मनुष्य के पूर्व जन्मों के कृत्यों के आधार पर होते हैं ।

हृदय रोग का कारक सूर्य तथा गुरु को माना जाता है । अगर ये अपने भाव को छोड़कर दूसरे भाव में चले जाते है तो हृदय रोग होने की संभावना होती है । सारावालिकार ने कहा भी है -

"तुहिन मयुखः कुरुते हृद्रोगिणमरिगृह नरं सततम"२

जन्मपत्रिका में सूर्य कुम्भ राशि गत हो तो हृदयरोगी (धमनी) में अवरोध उत्पन्न होता है ।३

सूर्य अगर मकर राशि गत हो तो जातक हृदय रोगी होता है ।४

हृदय रोग कारक ग्रह - होराशास्त्र के ग्रंथों में हृदय रोग कारक ग्रहयोग प्राप्त होते हैं द्य उनके आधार पर सर्वाधिक भूमिका जिनगृहों की होती है, उनका चार भागों में विभाजन किया जा सकता है -

ॉ- सामान्य हृदय रोग - सूर्य, शनि

१ - हृदयाघात कारक - शनि, मंगल

२ - उच्च रक्तचाप कारक - मंगल, गुरु

३ - हृच्छूल कारक - राहु, शनि, मंगल **उपचार -** मानव को सुख - दुःख, लाभ - हानि, आय - व्यय, रोग- शोकादि की प्राप्ति स्वयं के पाप कर्मों के परिणाम स्वरूप होती है। पूर्व जन्म - जन्मान्तरों के किये पाप कर्मों का फल मनुष्य को व्याधि के रूप में प्राप्त होता है । जिसको हम प्रारब्ध कहते हैं । लेकिन ईश्वर की अनुकम्पा, क्रियमाण असम सत्कर्मों के फलस्वरूप रोगों की अध्यात्म, योग एवं विभिन्न उपचारों के द्वारा स्वस्थता प्राप्त की जा सकती है । हृदय रोग कारक वैदिक मंत्र निम्नलिखित है -

सूर्य मंत्र -

"ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ।

हिरण्ययेन सविता रथेना देवोयाति भुवनानि पश्यन ।।"

चन्द्र मंत्र -

"ॐ इमं देवा असपत्नं सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्यायो इन्द्रीयाय।

इममुष्य पुत्रममुष्य विष एश वोमी राजा सोमोस्माकं ब्राह्मणानां राजा।।"

(IJRMST) 2018, Vol. No. 6, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5134, p-ISSN: 2455-9059**

शनि मंत्र –

"ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये द्य शं योरभिस्रवन्तु नः।।"

राहु मंत्र –

"ॐ कयांश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा द्य कया शचिष्ठया वृता।।"५

शिव चतुराक्षरी मन्त्र –

"ॐ वं जू"

"ॐ नमः शिवाय सम्भवे व्योमेशाय नमः"६

श्श्क्क घन्नघ मित्रामहः आरोहन्नुत्तरां दिवम। ह्द्रोग मम् सूर्य हरि मांण् च नाश्यं।।"

प्रातः काल प्रतिदिन सूर्योदय के समय सूर्य के सम्मुख उक्त मंत्र का १०८ बार जप करें।७

" अनु सूर्य मुदयताम हृदद्योतो हरिमा च ते ।
गो रोहितस्य वर्णेन तेन त्वा परि दध्मसि ।।"
"सुकेषु ते हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि ।
अथो हारिद्रवेषु ते हरिमाणं नि दध्मसि ।।"८

इन मंत्रो के अतिरिक्त रोगी हृदय को स्वस्थ रखने के लिए आदित्य हृदय स्तोत्र का जप, महामृत्युंजय मंत्र का जप करना चाहिए, इससे रोगी को अत्यंत लाभ प्राप्त होता है ।

उक्त वैदिक मंत्रो के अलावा शीघ्र लाभ प्रदान करने वाले तांत्रिक मंत्र तथा उनकी जप संख्या इस प्रकार है –

तान्त्रिक मन्त्रोपचार –१०

ग्रह	**तांत्रिक मन्त्र**	**जप**
सूर्य	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः, ॐ घृणि सूर्याय नमः	१७९९९
चंद्र	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः, ॐ चं चन्द्रमसे नमः	३३९९९
शनि	ॐ प्रा प्रिं प्रौं सः शनये नमः, ॐ शं शनैश्चराय नमः	८१९९९
राहु	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः, ॐ रं राहवे नमः	६१९९९

भौतिक उपचार – हृदय रोग परिहार्य के लिए घर में ही उपलब्ध भौतिक पदार्थों को दान करना चाहिए । जो इस प्रकार हैं- उड़द, गेहूँ, चावल, तिल, आदि ।

यौगिकोपचार – प्राणायाम, आसनादि विधि से भी हृदय रोग से मुक्त हो सकते हैं। हृदय रोग निवृत्ति के लिए नाड़ी शोधन, भ्रामरी, मकरासन, ताड़ासन, वृक्षासन, एवं भुजंगासन करना चाहिए । इन आसनों के करने से रोगी कुछ महीनों में स्वस्थ होने लगता है । क्योकि इन आसनों का सीधा सम्बन्ध हमारे हृदय से होता है ।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मंत्र सबसे प्राचीन चिकित्सा होने के साथ ही आज आधुनिक समय में भी विभिन्न प्रकार के रोगों के निवारण में अत्यंत कारगर साबित होता है । अगर मन्त्रों का जप सही प्रकार से सही तिरिके से किया जाये तो यह अत्यंत लाभदायक है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ –

ॉ- छा ६ उप २/ॉ३/२, ७/ॉ/ॉ

१- अथर्व ६ॉ६/१/२ॉ

२- सारावली -३३-३४

३ - सारावली- ३५- ३६

४-सारावली- ३७- ३८

५- बृहत् पराशर होरा शास्त्र, अ६ - ३४, श्लोक -ॉ६-ॉ७

६- यजुर्वेद १/१ॉ

७- ऋग्वेद

८- अथर्व ६ ४/२३

ॉ६- मन्त्र महो६, तरंग ॉ४

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि –

ॉ- सारावली - डा६ मुरलीधर चतुर्वेदी, श्रीमत कल्याण वर्मा, कांतिमती हिंदी व्याख्या सहित , मोतीलाल बनारसीदास प्रा६ लि६

१- जातकालंकार - डा६ सतेंद्र मिश्र , चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, १६ॉ१

२-शु६ यजु६ रुद्राष्टाध्यायी - डा६ नरोत्तम पुजारी, डा६ रवि पुजारी, अखिल भारतीय ज्योतिष शोध संस्थान, जोधपुर, १६ॉ६(ॉ)

३ - बृहत् पराशर होरा शास्त्र - डा६ सुरेन्द्र चन्द्र मिश्र, राजन पब्लिकेशन, १६ॉ४(ॉ)

४ - मन्त्र महोदधि -

५ - ऋग्वेद संहिता - अग्नि महर्षि , वैदिक पुस्तकालय, अजमेर

६ - अथर्ववेद संहिता - क्षेमकरण दास, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

(IJRMST) 2018, Vol. No. 6, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5134, p-ISSN: 2455-9059**

७ - आयुर्वेद का वैज्ञानिक इतिहास - आचार्य प्रियव्रत शर्मा, चौखम्भा ओरियन्टालिया, वाराणसी

८ - वेदो में आयुर्वेद - डा॰ कपिलदेव द्विवेदी, विश्वभारती अनुसन्धान परिषद्, ज्ञानपुर (भदोही)

९ - यजुर्वेद संहिता - महर्षि दयानन्द सरस्वती, चौखम्भा ओरियन्टालिया

१० - छान्दोग्योपनिषद - शांकरभाष्य सहित, गीता प्रेस, गोरखपुर

११- आसन, प्राणायाम, बांध, मुद्रा, पंचकोश, ध्यान- ब्रह्मवर्चस, शांतिकुंज, हरिद्वार